मुखपृष्ठ

साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 2, अंक 34, अप्रैल(प्रथम), 2018

आँखों में रात कट गई

डा० राम गरीब 'विकल'

आँखों में रात कट गई,
एक धवल भोर के लिए।
एक किरन भी नहीं मिली,
तरसते अँजोर के लिए।

पोर-पोर टीसते रहे,
ज़ख़्म दाँत पीसते रहे।
जठरानल भड़कते रहे,
नयन जल उलीचते रहे।
रोटी जब चाँद हो गई,
लालसा चकोर के लिए।
एक किरन भी नहीं मिली,
तरसते अँजोर के लिए।

म्लान सभी फूल हो गये,
सपने दिक्शूल हो गये।
लहरों ने गोद ले लिया,
ओझल सब कूल हो गये।

साँस-साँस यत्न कर रहे,
सागर के छोर के लिए।
एक किरन भी नहीं मिली,
तरसते अँजोर के लिए।

था अबूझ लेख भाल का,
फिर भी हम बाँचते रहे।
क्या छूटा, क्या मिटा दिया,
मन ही मन जाँचते रहे।
अर्थहीन ग्रन्थ सब हुए,
भावना लजोर के लिए।
एक किरन भी नहीं मिली,
तरसते अँजोर के लिए।

बात मन की, मन में रह गई,
और होंठ रह गये सिले।
फूलों की राह थी चुनी,
किन्तु, सिर्फ शूल ही मिले।
हाथ-पैर मारते 'विकल',
जीवन की डोर के लिए।
एक किरन भी नहीं मिली,
तरसते अँजोर के लिए।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें